International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.6 July – August 2023

'कामायनी' की प्रासंगिकता

डॉ. सोमनाथ वांजरवाडे

सहयोगी प्राध्यापक,

विवेकानंद महाविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर

Corresponding Author – डॉ. सोमनाथ वांजरवाडे

DOI - 10.5281/zenodo.22548765

हिंदी साहित्य में जयशंकर प्रसाद एक अत्यंत महत्वपूर्ण साहित्यकार है जिन्होंने साहित्य को इतिहास, संस्कृति, दर्शन और मानवीय संवेदना से जोड़ा। उनकी रचनात्मकता का चरम 'कामायनी' में दिखाई देता है। जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' हिंदी साहित्य की उन कालजयी कृतियों में है जिनका महत्व केवल उनके रचनाकाल तक सीमित नहीं है। काल की सीमाओं को लाँघकर वर्त्तमान समय में अपनी उपयोगिता बड़ी शिद्दत के साथ साबित की है। पौराणिक मनु की कथा को आधार बनाकर रचित यह महाकाव्य आधुनिक मनुष्य की मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं का गहन रूपक प्रस्तुत करता है। 'कामायनी' के पंद्रह सर्ग - चिंता, आशा, श्रद्धा, काम, वासना, लज्जा, कर्म, ईर्ष्या, इड़ा, स्वप्न, संघर्ष, निर्वेद, दर्शन, रहस्य और आनंद मानव-चेतना की विभिन्न अवस्थाओं तथा उसके विकास-क्रम को अभिव्यक्त करते हैं। आधुनिक मनुष्य वैज्ञानिक और तकनीकी दृष्टि से अत्यंत विकसित होने के बावजूद मानसिक तनाव, अकेलेपन, असंतोष, मूल्य-संकट, उपभोक्तावाद, पर्यावरणीय संकट और सामाजिक विघटन जैसी समस्याओं से घिरा हुआ है। ऐसी स्थिति में प्रसाद का मनु केवल पौराणिक पात्र नहीं, बल्कि ऐसा मनुष्य है जो विनाश के बाद नई सभ्यता का निर्माण करता है और इसी प्रक्रिया में अपनी आंतरिक शक्तियों के संघर्ष से गुजरता है।

कामायनी भारतीय मिथकीय परंपरा को आधार बनाते हुए मानव-जीवन के मूल प्रश्नों पर विचार करती है। 'कामायनी' की कथा मनु और प्रलय से आरंभ होती है। प्रलय के पश्चात् मनु अकेले रह जाते हैं। उनके सामने एक ओर विनाश का दृश्य है और दूसरी ओर नए जीवन के निर्माण की चुनौती। इस प्रारंभिक स्थिति को आधुनिक मनुष्य की स्थिति का प्रतीक माना जा सकता है ऐसा मनुष्य जो अपने बनाए हुए संसार में अभूतपूर्व शक्ति प्राप्त कर चुका है, लेकिन उसी शक्ति के कारण नए संकटों का सामना भी कर रहा है। 'कामायनी' का महत्व इसी कारण है कि उसका मिथक स्थिर नहीं है। वह हर युग

में नए अर्थ ग्रहण कर सकता है। मुक्तिबोध ने भी ‘कामायनी: एक पुनर्विचार’ में इस कृति को पारंपरिक सौंदर्यवादी सीमाओं से बाहर निकालकर सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भों में देखने का प्रयास किया। मुक्तिबोध ने मनु, श्रद्धा और इड़ा को विशुद्ध मानवीय चरित्रों के रूप में पढ़ते हुए ‘कामायनी’ के मिथकीय संदर्भ को समकालीन प्रासंगिकता से जोड़ने का प्रयास किया।

‘कामायनी’ आधुनिक मनुष्य को एक समन्वित जीवन-दृष्टि प्रदान करती है। श्रद्धा भावना और आस्था की, इड़ा बुद्धि और विवेक की तथा मनु मानव-चेतना की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति हैं। इन शक्तियों के असंतुलन से संकट उत्पन्न होता है, जबकि इनके समन्वय से जीवन में आनंद और सार्थकता आती है। ‘कामायनी’ की सभ्यता-समीक्षा आज के प्रकृति-संकट और एकांगी विकास के संदर्भ में भी महत्त्वपूर्ण है। आधुनिक आलोचना, विशेषतः मुक्तिबोध का पुनर्पाठ, यह सावधानी भी प्रस्तुत करता है कि केवल आध्यात्मिक समरसता को सामाजिक समस्याओं का पूर्ण समाधान नहीं माना जा सकता। अतः ‘कामायनी’ का आधुनिक महत्व उसके अतीत में नहीं, बल्कि वर्तमान मनुष्य की समस्याओं को नए ढंग से समझने और मनुष्य, समाज तथा प्रकृति के बीच संतुलन की आवश्यकता को रेखांकित करने में निहित है।

आधुनिक मनुष्य जीवन को यदि ध्यान से देखा जाए तो उनमें ‘कामायनी’ के अनेक संदर्भों की प्रतिध्वनि सुनाई देती है। बुद्धि और भावना का संघर्ष, इच्छाओं का विस्तार, अहंकार, प्रतिस्पर्धा, प्रकृति पर नियंत्रण की अतिमहत्वकांक्षा, सामाजिक असमानता, मानसिक असंतोष और जीवन के अर्थ की तलाश। इसीलिए ‘कामायनी’ का आधुनिक संदर्भ में अध्ययन केवल साहित्यिक अभ्यास नहीं, बल्कि मनुष्य और सभ्यता के वर्तमान संकट को समझने का एक माध्यम भी है। आधुनिक युग विज्ञान और तकनीक का युग है। मनुष्य ने प्रकृति की अनेक शक्तियों को नियंत्रित करने की क्षमता प्राप्त की है। संचार, चिकित्सा, परिवहन और सूचना-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुए विकास ने जीवन को पहले की तुलना में अधिक सुविधाजनक बनाया है। फिर भी आधुनिक मनुष्य कई स्तरों पर संकटग्रस्त है। उसके पास साधन हैं, लेकिन संतोष नहीं; सूचना है, लेकिन हमेशा विवेक नहीं; संपर्क के साधन हैं, लेकिन आत्मीय संबंधों का संकट है; प्रकृति पर अधिकार की शक्ति है, लेकिन पर्यावरणीय संतुलन का संकट भी है। यह विरोधाभास ‘कामायनी’ को आज के संदर्भ में प्रासंगिक बनाता है। ‘कामायनी’ में निहित मानव-चेतना, समरसता, प्रकृति-संबंध और आनंद की अवधारणा आधुनिक मनुष्य के मानसिक, सामाजिक और सभ्यतागत संकटों को आज के परिप्रेक्ष्य में समझने के बाद और अधिक प्रासंगिक नजर आती है।

‘कामायनी’ वर्तमान तकनीकी और उपभोक्तावादी सभ्यता, प्रकृति और मानव का संबंध

आज के पर्यावरणीय संकट, आधुनिक तनाव और असंतोष, सामाजिक संघर्षों और विषमताओं के परिदृश्य में और अधिक निकट लगती है। ‘कामायनी’ का आधार भारतीय मनु-परंपरा है। प्रसाद ने स्वयं कृति की भूमिका में कहा है कि – “यह आख्यान इतना प्राचीन है कि इतिहास में रूपक का भी अद्भुत मिश्रण हो गया है।”[१] मनु की कथा के वैदिक और पौराणिक स्रोतों की ओर संकेत किया है। लेकिन प्रसाद का मनु केवल पौराणिक मनु नहीं है। वह मनुष्य की चेतना का प्रतिनिधि है। प्रलय यहाँ एक ऐतिहासिक या प्राकृतिक घटना से अधिक सभ्यता के संकट का रूपक बन जाता है। आधुनिक मनुष्य भी अपने द्वारा निर्मित सभ्यता के भीतर अनेक प्रकार के ‘प्रलय’ देख रहा है—युद्ध, पर्यावरणीय संकट, सामाजिक विघटन, तकनीकी नियंत्रण, आर्थिक असमानता और मानसिक तनाव। प्रसाद का मिथकीय रूपक मानव और प्रकृति के संबंध तथा सभ्यता के संकटों को संबोधित करता है।

मनु ‘कामायनी’ का मुख्य पात्र हैं। मनु के व्यक्तित्व में आधुनिक मनुष्य की अनेक विशेषताएँ देखी जा सकती हैं। वे जिज्ञासु हैं, सृजनशील हैं, लेकिन अस्थिर भी हैं। वे जीवन को समझना चाहते हैं, उसे नियंत्रित करना चाहते हैं और उसके लिए नए रास्ते बनाना चाहते हैं। इसी प्रक्रिया में वे कई बार अपने भीतर के संतुलन को खो देते हैं। आज का मनुष्य भी कुछ ऐसा ही है। उसने विज्ञान और तकनीक के माध्यम से प्रकृति पर असाधारण नियंत्रण प्राप्त किया है। किंतु वह जितना बाहर की दुनिया को नियंत्रित करता गया, उतना ही अपने भीतर की बेचैनी से जूझता गया। मनु का संघर्ष इसलिए आधुनिक मनुष्य के संघर्ष से जुड़ जाता है। कामायनी के चिंता सर्ग मनु के माध्यम आधुनिक जीवन को अभिव्यक्त करती है –

“मौन! नाश! विध्वंस! अंधेरा! शून्य बना जो प्रकट
अभाव,
वहीं सत्या है, अरी अमरते! तुझको यहाँ कहाँ अब
ठाव।”[२]

आधुनिक समाज में मानसिक संकट एक बड़ी समस्या के रूप में उभकर सामने आयी है जिसे हम ‘कामायनी’ में देख सकते है का आरंभ ‘चिंता’ सर्ग से होता है। मनुष्य चिंता से मुक्त नहीं है। रोजगार, आर्थिक असुरक्षा, प्रतियोगिता, सामाजिक प्रतिष्ठा, भविष्य की चिंता और संबंधों की अस्थिरता आदि के भवर में मनुष्य फंसा हुआ दिखाई देता है। जैसे –

“चिंता करता हूँ मैं जितनी उस अतीत की,
उस सुख की,
उतनी ही अनंत में बनती जाती रेखाएं दुःख
की।”[३]

‘चिंता’ सर्ग में प्रलय के बाद मनु की मनःस्थिति अस्तित्वगत संकट को व्यक्त करती है। जो मनु के मन में उत्पन्न चिंता की मनोवैज्ञानिक स्थिति के रूप में व्याख्यायित करता है। इसलिए चिंता आज के मनुष्य के लिए केवल काव्यात्मक भाव नहीं है; यह आधुनिक अस्तित्व का वास्तविक

अनुभव है। आधुनिक मनुष्य संकटों से घिरा होने के बावजूद भविष्य की संभावना को समाप्त नहीं कर सकता। आशा उसे पुनर्निर्माण की शक्ति देती है। जिसका संकेत चिंता के बाद 'आशा' का आना 'कामायनी' की जीवन-दृष्टि का महत्त्वपूर्ण संकेत है। आज जब समूचा विश्व युद्ध, जलवायु परिवर्तन और सामाजिक असुरक्षा जैसी समस्याएँ भविष्य को लेकर चिंता पैदा करती हैं, तब 'आशा' का मूल्य और बढ़ जाता है।'कामायनी' यह संदेश देती है कि संकट के बीच भी मनुष्य को सृजन की संभावना खोजनी चाहिए।

आधुनिक काल विज्ञान और तकनीक की क्रांति का रहा है, जिसमें कई सारी चींजे विज्ञान ने इजाद की है जिससे मनुष्य जीवन सहज और सुचारू बन गया है। इसके साथ ही मनुष्य में भावनात्मक अलगाव की एक बड़ी समस्या बन गई है। डिजिटल माध्यमों ने संचार को तीव्र किया है, लेकिन संचार और आत्मीयता एक ही चीज नहीं हैं। व्यक्ति भीड़ में होते हुए भी अकेला महसूस कर रहा है। कामायनी श्रद्धा के रूप में इस स्थिति के लिए एक वैकल्पिक जीवन-मूल्य प्रस्तुत करती है। वह प्रेम, विश्वास, करुणा और आत्मीयता की प्रतीक है। श्रद्धा का महत्व यह है कि वह मनुष्य को संबंधों की दुनिया में पुनः स्थापित करती है। उसके माध्यम से मनुष्य केवल 'मैं' नहीं रहता, बल्कि 'दूसरे' की उपस्थिति को भी स्वीकार करता है। आधुनिक मनुष्य के लिए यह संदेश अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि तकनीकी संपर्क के साथ-साथ मानवीय आत्मीयता भी आवश्यक है। वहीं कामायनी में इड़ा बुद्धि, विवेक और ज्ञान की प्रतीक है। आधुनिक सभ्यता के विकास में बुद्धि और विज्ञान की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। आज चिकित्सा, संचार, अंतरिक्ष-विज्ञान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल तकनीक ने मानव जीवन को बदल दिया है। लेकिन तकनीक स्वयं न तो नैतिक है और न अनैतिक; उसका स्वरूप इस बात पर निर्भर करता है कि उसका उपयोग किस नियत के साथ किया जा रहा है। यहीं 'कामायनी' की इड़ा प्रासंगिक हो जाती है। बुद्धि को भावना से अलग कर देने पर तकनीकी क्षमता मनुष्य के लिए संकट पैदा कर सकती है। यदि ज्ञान के साथ करुणा और नैतिक विवेक न हो, तो सभ्यता का विकास विनाशकारी भी हो सकता है। इसलिए 'कामायनी' आधुनिक मनुष्य को बुद्धि का त्याग नहीं, बल्कि बुद्धि का मानवीकरण सिखाती है।

'कामायनी' की आधुनिक प्रासंगिकता का सबसे महत्त्वपूर्ण आधार भावना और बुद्धि का समन्वय है। आज की शिक्षा-व्यवस्था में बौद्धिक क्षमता को अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है। लेकिन जीवन केवल परीक्षा, करियर और उपलब्धि नहीं है। मनुष्य के भीतर संवेदना, करुणा, नैतिकता और कल्पना का भी विकास होना चाहिए। यदि आधुनिक मनुष्य के पास बुद्धि है लेकिन संवेदना नहीं, तो उसका विकास अधूरा है। इसी प्रकार यदि उसके भीतर भावना है लेकिन विवेक नहीं, तो वह भी संतुलित जीवन नहीं जी सकता। 'कामायनी'

दोनों के बीच समन्वय कर उसका समाधान प्रस्तुत करती है।

उपभोक्तावाद आधुनिक मनुष्य के जीवन का एक प्रमुख आयाम है। विज्ञापन व्यक्ति को निरंतर नई इच्छाओं की ओर प्रेरित करता है। इच्छा पूरी होने के बाद तुरंत दूसरी इच्छा जन्म लेती है। इस निरंतर असंतोष की स्थिति में व्यक्ति वस्तुओं का उपभोक्ता बनता जाता है और धीरे-धीरे वस्तुएँ उसके जीवन के अर्थ का निर्धारण करने लगती हैं। 'कामायनी' इस मानसिकता के लिए संयम और संतुलन का विकल्प प्रस्तुत करती है। आनंद वस्तुओं की संख्या में नहीं, बल्कि उनके साथ हमारे संबंध और जीवन के व्यापक संतुलन में है। आधुनिक जीवन में चिंता, अकेलापन, असुरक्षा और अस्तित्वगत प्रश्न अत्यंत सामान्य हो गए हैं। 'कामायनी' को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पढ़ने पर चिंता से आनंद तक की यात्रा विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण दिखाई देती है। 'कामायनी' आधुनिक मनुष्य को यह सिखाती है कि मानसिक संकट को दबाना नहीं चाहिए; उसे समझना चाहिए। चिंता से आशा, आशा से संबंध, संबंध से कर्म, कर्म से संघर्ष और संघर्ष से आत्मबोध की यात्रा मनुष्य को अधिक परिपक्व चेतना की ओर ले जा सकती है। आज के आधुनिक उपभोक्तावादी समाज में मनुष्य की इच्छाएँ निरंतर बढ़ती रहती हैं। नई वस्तु, नई सुविधा, नया अनुभव और नई उपलब्धि प्राप्त करने की इच्छा स्वयं में गलत नहीं है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब इच्छा मनुष्य की आवश्यकताओं पर नियंत्रण स्थापित कर लेती है। 'कामायनी' के 'काम' और 'वासना' सर्ग इस मनोवैज्ञानिक स्थिति को समझने में उपयोगी हैं। 'काम' सृजनात्मक इच्छा और जीवन-प्रेरणा का प्रतीक हो सकता है, जबकि 'वासना' उस इच्छा के असंतुलित रूप को व्यक्त करती है। आज विज्ञापन-प्रधान संस्कृति मनुष्य की इच्छाओं को लगातार बढ़ा रही है। इस संदर्भ में 'कामायनी' का संदेश है कि इच्छा को नष्ट नहीं, बल्कि परिष्कृत और संयमित किया जाना चाहिए।

आधुनिक स्वतंत्रता के युग में व्यक्तिगत अधिकारों की महत्ता बढ़ी है। लेकिन स्वतंत्रता के साथ उत्तरदायित्व भी आवश्यक है।'लज्जा' सर्ग को इसी नैतिक आत्मचेतना के संदर्भ में पढ़ा जा सकता है। यहाँ लज्जा मनुष्य की ऐसी आंतरिक चेतना है जो उसे अपने आचरण का मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित करती है। आज सोशल मीडिया और सार्वजनिक जीवन में व्यक्ति के व्यवहार की सीमाएँ लगातार बदल रही हैं। ऐसे समय में बाहरी नियंत्रण की अपेक्षा आंतरिक नैतिकता अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है। इस दृष्टि से 'लज्जा' आत्मसंयम और नैतिक विवेक का प्रतीक बन जाती है।'कामायनी' का कर्म-सिद्धांत आधुनिक मनुष्य के लिए अत्यंत उपयोगी है। संकटों पर केवल विचार करना पर्याप्त नहीं। उन्हें बदलने के लिए कर्म आवश्यक है। पर्यावरणीय संकट हो, सामाजिक अन्याय हो या मानसिक स्वास्थ्य की समस्या इनका समाधान

केवल चिंतन से नहीं होगा। सामूहिक और रचनात्मक कर्म आवश्यक है। 'कामायनी' मनुष्य को निष्क्रिय पलायन की अपेक्षा सक्रिय जीवन की ओर ले जाती है। इस अर्थ में आधुनिक नागरिक के लिए कर्म का संदेश है समस्या से भागो नहीं, बल्कि उसके समाधान की प्रक्रिया में सहभागी बनो।

आधुनिक जीवन प्रतियोगिता से भरा हुआ है। शिक्षा, रोजगार, व्यवसाय और सामाजिक प्रतिष्ठा—हर क्षेत्र में मनुष्य दूसरों से तुलना करता है। यह तुलना कई बार ईर्ष्या में बदल जाती है। 'ईर्ष्या' सर्ग आधुनिक प्रतिस्पर्धात्मक संस्कृति की मनोवैज्ञानिक समस्या को समझने का उपयोगी माध्यम है। जब मनुष्य अपने सुख को दूसरे की असफलता से जोड़ने लगता है, तब उसका अपना जीवन भी असंतोष से भर जाता है। 'कामायनी' का आनंद-दर्शन इस मानसिकता का विकल्प प्रस्तुत करता है दूसरे के सुख को अपने सुख का विस्तार मानना। जिसका सार्थक और सुंदर संदेश कामायनी अपने कर्म सर्ग में देती है - "औरों को हंसते देखों मनु – हँसों और सुख पाओ, अपने सुख को विस्तृत करों कर लो सब को सुखी बनाओ"[४]

आधुनिक सभ्यता का निर्माण विज्ञान की सबसे बड़ी उपलब्धि है। वैज्ञानिक दृष्टि अंधविश्वास और रूढ़ियों से मुक्ति, प्रकृति के नियमों की समझ और तकनीकी विकासये सभी बुद्धि की देन हैं। 'कामायनी' इड़ा के माध्यम से बुद्धि की इसी शक्ति को स्वीकार करती है। लेकिन समस्या तब पैदा होती है जब वैज्ञानिक क्षमता नैतिकता से अलग हो जाए। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव-प्रौद्योगिकी, निगरानी-तकनीक और स्वचालन जैसी शक्तियाँ मानव जीवन को तेजी से बदल रही हैं। प्रश्न यह नहीं कि तकनीक विकसित होनी चाहिए या नहीं; प्रश्न यह है कि तकनीकी विकास किस मानवीय उद्देश्य के लिए हो। 'कामायनी' की भावना-बुद्धि समन्वय की दृष्टि इस प्रश्न के लिए महत्त्वपूर्ण नैतिक आधार प्रदान करती है।

आधुनिक समाज में संघर्ष कई रूपों में उपस्थित है - व्यक्ति और समाज के बीच, पूँजी और श्रम के बीच, विकास और पर्यावरण के बीच, परंपरा और आधुनिकता के बीच तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक उत्तरदायित्व के बीच। 'कामायनी' का 'संघर्ष' सर्ग मनुष्य की चेतना में उपस्थित ऐसे द्वंद्वों को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। संघर्ष को केवल नकारात्मक नहीं माना जा सकता। वह परिवर्तन की प्रक्रिया का हिस्सा भी है। लेकिन यदि संघर्ष का समाधान हिंसा, अहंकार या प्रभुत्व में खोजा जाए तो वह विनाशकारी हो सकता है। समरसता का अर्थ संघर्ष को दबाना नहीं, बल्कि उसे रचनात्मक समाधान की दिशा में ले जाना है।

आधुनिक मनुष्य उपलब्धियों के बावजूद कई बार भीतर से खाली अनुभव करता है। इसे आधुनिक मोहभंग कहा जा सकता है। 'निर्वेद' इसी प्रकार के मोहभंग की अवस्था है। मनुष्य जब बाहरी उपलब्धियों की सीमाओं को पहचानता है, तब वह

अपने जीवन के अर्थ पर पुनर्विचार करता है। यहाँ 'निर्वेद' पलायन नहीं, बल्कि आत्मचिंतन की संभावना है। आज के उपभोक्तावादी समाज में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित होता है कि - क्या जीवन का अर्थ केवल अधिक प्राप्त करना है? 'कामायनी' का उत्तर है - नहीं। जीवन की सार्थकता उसके संतुलन, संबंधों और व्यापक मानवीय अर्थ में है। मनुष्य क्या जानता है, क्या चाहता है और क्या करता है -इन तीनों के बीच यदि दूरी हो जाए तो जीवन में तनाव पैदा होता है। आज मनुष्य पर्यावरण-संकट को जानता है, लेकिन उसका जीवन-व्यवहार हमेशा पर्यावरण-सम्मत नहीं होता। वह स्वास्थ्य के महत्व को समझता है, लेकिन जीवन-शैली इसके विपरीत हो सकती है। वह शांति चाहता है, लेकिन प्रतिस्पर्धा और तनाव को लगातार बढ़ाता रहता है। इसलिए 'कामायनी' का ज्ञान-इच्छा-कर्म समन्वय आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।

'कामायनी' का अंतिम सर्ग 'आनंद' है। यह पूरी रचना का या मनु के माध्यम से मनुष्य की यात्रा का निष्कर्ष भी है और सार्थक संदेश भी है। यहाँ आनंद केवल निजी सुख नहीं है। कामायनी की इन प्रसिद्ध पंक्तियों के माध्यम से देख सकते है -

"औरों को हँसते देखो मनु,
हँसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो,
सबको सुखी बनाओ।"[५]

यहाँ आनंद का सामाजिक रूप स्पष्ट हो जाता है। और यही 'आनंद' आधुनिक जीवन का विकल्प बन जाता है। आधुनिक मनुष्य के लिए इसका अर्थ है कि व्यक्तिगत सफलता को सामाजिक संवेदना से अलग नहीं किया जा सकता। यदि मेरी सफलता किसी दूसरे के विनाश पर आधारित है तो वह पूर्ण आनंद नहीं है। यदि मेरा विकास प्रकृति के विनाश पर आधारित है तो वह भी स्थायी आनंद नहीं है। यदि मेरी उपलब्धियाँ मुझे दूसरों से काट देती हैं तो वे भी अधूरी हैं। इस प्रकार 'कामायनी' का आनंद आधुनिक मनुष्य को साझा सुख और मानवीय सह-अस्तित्व की ओर ले जाता है।

आज दुनिया कई गंभीर समस्याओं से जूझ रही है उनमें से सबसे गंभीर समस्या है - पर्यावरणीय संकट है। जलवायु परिवर्तन, जैव-विविधता का ह्रास, जल-संकट और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन मानव सभ्यता के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं। 'कामायनी' की सभ्यता-समीक्षा इस संदर्भ में महत्त्वपूर्ण हो जाती है। कामायनी में प्रकृति केवल मनुष्य के उपयोग की वस्तु नहीं है। वह मानव-अस्तित्व की सहचरी है। प्रकृति से कटकर निर्मित सभ्यता अंततः स्वयं अपने लिए संकट उत्पन्न करती है। इसलिए 'कामायनी' का प्रकृति-दर्शन आधुनिक पर्यावरण-चेतना के लिए महत्त्वपूर्ण वैचारिक आधार बन सकता है। आधुनिक शिक्षा में ज्ञान और कौशल पर अत्यधिक बल दिया जाता है। लेकिन मनुष्य को केवल कुशल कर्मचारी

नहीं, संवेदनशील नागरिक भी बनना चाहिए। 'कामायनी' की श्रद्धा और इड़ा का समन्वय शिक्षा के लिए एक सुंदर रूपक प्रस्तुत करता है। इड़ा बिना श्रद्धा के ज्ञान को यांत्रिक बना सकती है और श्रद्धा बिना इड़ा के संवेदना को विवेकहीन। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि समग्र व्यक्तित्व-विकास होना चाहिए।

'कामायनी' की आधुनिक प्रासंगिकता पर विचार करते समय मुक्तिबोध को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। 'कामायनी: एक पुनर्विचार' में मुक्तिबोध ने कृति को सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भों में पढ़ने का प्रयास किया। उनके पुनर्पाठ का महत्व इस बात में है कि वे 'कामायनी' के प्रतीकों को केवल मनोवैज्ञानिक या आध्यात्मिक स्तर पर सीमित नहीं रखते। उपलब्ध प्रकाशकीय विवरण के अनुसार मुक्तिबोध ने मनु, श्रद्धा और इड़ा को मानवीय चरित्रों के रूप में पढ़ते हुए कृति के मिथकीय संदर्भ को समकालीनता से जोड़ा। मुक्तिबोध की दृष्टि से यह प्रश्न उठता है कि 'समरसता' की स्थापना का आदर्श वास्तविक सामाजिक संघर्षों और विषमताओं को किस सीमा तक संबोधित करता है। 'कामायनी' की प्रासंगिकता को और कई आयामों से समझ सकते है - 'चिंता' से 'आनंद' तक की यात्रा आधुनिक मनुष्य के मानसिक संघर्ष का रूपक है। श्रद्धा मनुष्य को प्रेम, विश्वास और संबंधों की आवश्यकता का बोध कराती है। इड़ा विवेक, तर्क और ज्ञान की आवश्यकता को रेखांकित करती है। 'लज्जा' आत्मसंयम और उत्तरदायित्व की चेतना का प्रतीक है। 'कर्म' और 'ईर्ष्या' मनुष्य के सामाजिक व्यवहार तथा प्रतिस्पर्धा के प्रश्नों को सामने लाते हैं। प्रलय और उसके बाद का पुनर्निर्माण सभ्यता के संकट और पुनर्निर्माण का रूपक बन जाता है। प्रकृति के साथ सामंजस्य आधुनिक पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है।'दर्शन', 'रहस्य' और 'आनंद' मनुष्य के अस्तित्व और जीवन की सार्थकता पर विचार करते हैं। यहाँ पर रामस्वरूप चतुर्वेदी कथन महत्वपूर्ण बन जाता है – "कामायनी आधुनिक हिंदी काव्य में अर्थ और अनुभव की अद्वैत-प्रक्रिया का बेजोड़ उद्धरण है।"

अंत: कह सकते कि 'कामायनी' की प्रासंगिकता इस तथ्य में निहित है कि वह मनुष्य के उन मूल प्रश्नों को संबोधित करती है जो समय बदलने पर भी समाप्त नहीं होते। कामायनी मनु की यात्रा के माध्यम से कई प्रश्नों को अनुभव कराती है। आधुनिक मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या यह है कि उसका बाहरी विकास उसके आंतरिक विकास से आगे निकल गया है। विज्ञान और तकनीक ने उसकी शक्ति बढ़ाई है, लेकिन शक्ति के साथ विवेक और संवेदना का विकास समान गति से नहीं हुआ। 'कामायनी' इस असंतुलन के विरुद्ध समन्वय की जीवन-दृष्टि प्रस्तुत करती है। श्रद्धा हमें बताती है कि मनुष्य को प्रेम और आस्था चाहिए। इड़ा बताती है कि ज्ञान और विवेक आवश्यक हैं। कर्म बताता है

कि जीवन को सक्रिय रूप से जीना होगा। संघर्ष बताता है कि विकास आसान नहीं है। निर्वेद बताता है कि बाहरी उपलब्धियों की सीमाएँ हैं। दर्शन और रहस्य मनुष्य को आत्मबोध की ओर ले जाते हैं। और अंततः आनंद यह बताता है कि जीवन की पूर्णता केवल निजी सुख में नहीं, बल्कि व्यापक मानवीय सुख में है। 'कामायनी' की यह दृष्टि आज के उपभोक्तावादी समाज के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आधुनिक मनुष्य को यह समझना होगा कि वस्तुओं की वृद्धि जीवन की गुणवत्ता की गारंटी नहीं है। स्थायी संतोष के लिए संबंध, संवेदना, प्रकृति, आत्मबोध और सामाजिक उत्तरदायित्व आवश्यक हैं। इसी प्रकार 'कामायनी' का प्रकृति-संबंधी दृष्टिकोण आधुनिक पर्यावरणीय संकट में विशेष महत्त्व रखता है। सभ्यता यदि प्रकृति के साथ संघर्ष करते हुए आगे बढ़ेगी तो अंततः उसका संकट स्वयं मनुष्य के सामने लौटेगा। इस दृष्टि से 'कामायनी' अतीत की केवल साहित्यिक स्मृति नहीं है। वह वर्तमान मनुष्य के सामने खड़े प्रश्नों को समझने का एक सशक्त वैचारिक उपकरण है। 'कामायनी' की प्रासंगिकता केवल आधुनिक समस्याओं तक नहीं है, तो वह सभी आधुनिक समस्याओं के प्रत्यक्ष समाधान भी देती है। जिसका सार या संदेश कहें तो वह है समन्वय, मानवीयता और संतुलित जीवन है।

संदर्भ:

1. कामायनी – जयशंकर प्रसाद, पृ. ०५
2. वहीं - पृ. ०६
3. वहीं - पृ. ०२
4. वहीं - पृ. ४२
5. वहीं - पृ. ४२
6. कामायनी का पुनर्मुल्यांकन – रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृ. ५२